पत्थर का सूप

एन, चित्र : विनस्लो, हिंदी : विदूषक

पत्थर का सूप

एन, चित्र : विनस्लो, हिंदी : विदूषक

एक नौजवान सड़क पर चल रहा था.
वो बस चलता ही जा रहा था.
वो पूरी रात चला.
फिर वो पूरे दिन चला.

अंत में वो थक गया.
उसे बहुत भूख लगने लगी.

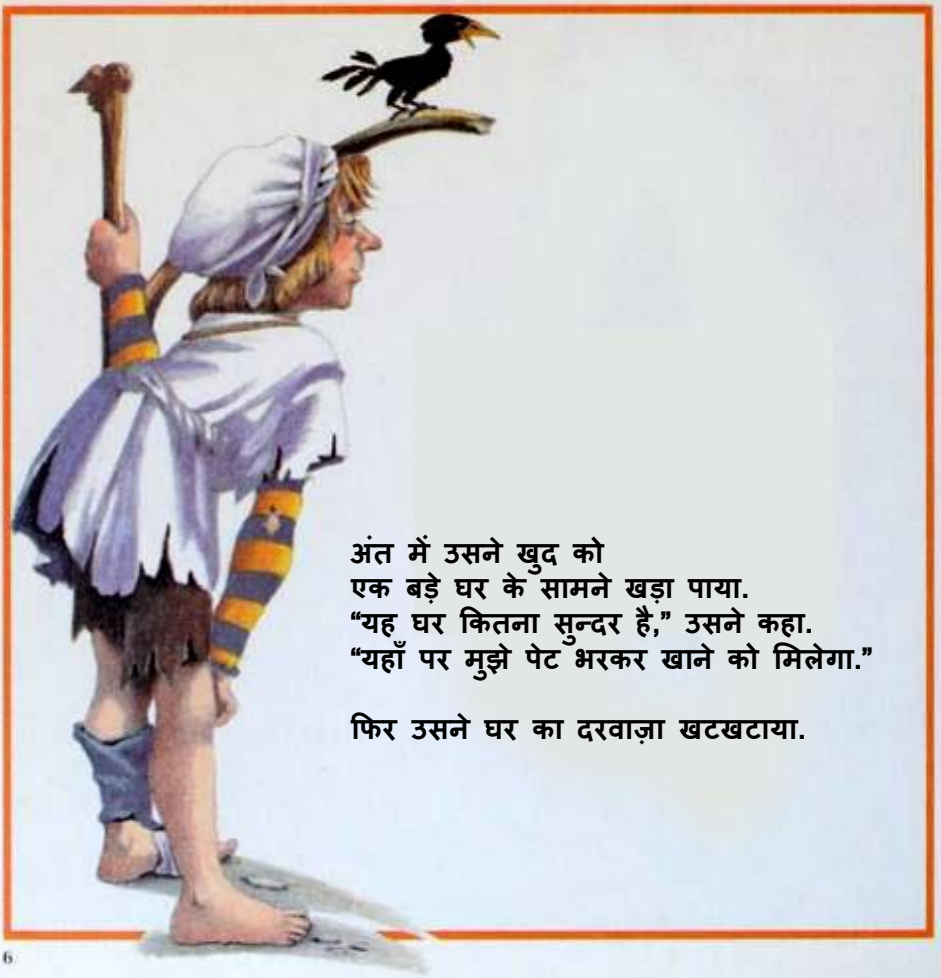

अंत में उसने खुद को
एक बड़े घर के सामने खड़ा पाया.
“यह घर कितना सुन्दर है,” उसने कहा.
“यहाँ पर मुझे पेट भरकर खाने को मिलेगा.”

फिर उसने घर का दरवाज़ा खटखटाया.

एक छोटी, बूढ़ी औरत ने दरवाज़ा खोला.
“मुझ पर रहम करो,” उस नौजवान ने कहा.
“मुझे बहुत भूख लगी है.
क्या तुम मुझे कुछ खाने को दे सकती हो?”

“मेरे पास तुम्हें देने को कुछ नहीं है,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.

“मेरे घर में कुछ नहीं है.
मेरे बगीचे में कुछ नहीं है.”
और वो अपना दरवाज़ा बंद करने लगी.

“रुको,” उस नौजवान ने कहा.
“कोई बात नहीं. तुम मुझे खाने को चाहें कुछ मत दो.
पर मुझे कम-से-कम एक पत्थर ही दे दो?”

“एक पत्थर?” उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“तुम भला पत्थर का क्या करोगे?
तुम पत्थर तो खा नहीं सकते?”

“अरे,” उस नौजवान ने कहा.
“मैं पत्थर का सूप बना सकता हूँ.”

उस छोटी, बूढ़ी औरत ने यह पहले कभी सुना नहीं था.
“पत्थर का सूप?
ज़रा कल्पना करो.”

“देखो, सड़क पर बहुत पत्थर पड़े हैं,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.

उस युवा ने एक गोल,
सिलेटी रंग का पत्थर उठा लिया.

“इस पत्थर से बहुत उम्दा सूप बनेगा,” उसने कहा.
“अब कृपा मुझे एक डेगची दो.”

फिर वो छोटी, बूढ़ी औरत एक डेगची लाई.
“उसे पानी से भरकर आग पर रख दो,”
उस युवा ने कहा.

उस छोटी, बूढ़ी औरत ने वही किया.

कुछ देर में पानी उबलने लगा और
उसमें से बुलबुले उठने लगे.

उसके बाद उस युवा ने उस डेगची में
सिलेटी रंग का पत्थर डाल दिया.
“अब हम पत्थर का सूप बनने का
इंतज़ार करेंगे,” उसने कहा.

डेगची का पानी काफी देर खौलता रहा.

कुछ देर बाद छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा,
“सूप तेज़ी से पक रहा है.”

“हाँ, वो बहुत तेज़ी से पक रहा है,”
उस भूखे नौजवान ने कहा.
“पर अगर हम उसमें कुछ प्याज डालते
तो फिर वो और तेज़ी से पकता.”

उसके बाद वो छोटी, बूढ़ी औरत
बगीचे से कुछ लाल प्याज़ लेने गई.

फिर डेगची में
लाल प्याज़ डाले गए.
साथ में गोल, सिलेटी पत्थर भी.

“पत्थर का सूप,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“ज़रा सोचो.”

इस बीच डेगची उबलती रही.

कुछ देर बाद उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“सूप में से अच्छी खुशबू आ रही है.”

“हाँ, खुशबू तो अच्छी है,”
उस भूखे युवा ने कहा.
“पर अगर उसमें कुछ गाजर पड़तीं
तो और भी बेहतर खुशबू आती.”

फिर वो छोटी, बूढ़ी औरत दुबारा बगीचे में गई.
और वहां से कुछ ताज़ी गाजर तोड़कर लाई.

फिर डेगची में गईं
लम्बी, पतली गाजरें,
उनके साथ में लाल प्याज़,
और एक गोल, सिलेटी पत्थर.

“पत्थर का सूप,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“ज़रा सोचो.”

डेगची का पानी खौलता रहा, खौलता रहा.

कुछ देर बाद उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“सूप तो अच्छा लग रहा है.”

“अब सूप का जायका अच्छा है,”
उस भूखे युवा ने कहा.

“पर अगर उसमें कुछ छोटे टमाटर पड़ते
तो उसका टेस्ट और अच्छा होता.”

उसके बाद वो छोटी, बूढ़ी औरत बगीचे से
कुछ छोटे लाल टमाटर लेकर आई.

फिर डेगची में गए
छोटे लाल टमाटर,
लम्बी, पतली गाजरें,
साथ में लाल प्याज़,
और एक गोल, सिलेटी पत्थर.

“पत्थर का सूप,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“ज़रा सोचो.”

डेगची लगातार उबलती रही.

कुछ देर बाद उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा,
“यह सूप तो किसी राजकुमार के लिए भी फिट है.”

“हाँ, अभी यह राजकुमार के लिए फिट है,”
उस भूखे युवा ने कहा.

“पर अगर उसमें कुछ काली मिर्ची और नमक पड़े,
तो वो राजा के लिए भी उपयुक्त बनेगा.”

फिर वो छोटी, बूढ़ी औरत
कुछ काली मिर्च और नमक लेने गई.

फिर डेगची में डाली गईं
काली मिर्च और नमक,
छोटे लाल टमाटर,
लम्बी, पतली गाजरें,
साथ में लाल प्याज़,
और एक गोल, सिलेटी पत्थर.

“पत्थर का सूप,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“ज़रा सोचो.”

डेगची लगातार उबलती रही.

कुछ देर बाद उस छोटी,
बूढ़ी औरत ने कहा,
“यह सूप तो काफी पतला है.”

"हाँ, अभी भी सूप कुछ पतला है,"
उस भूखे युवा ने कहा.

"पर कुछ मक्खन और जौ का आटा पड़ने से
वो बढ़िया और गाढ़ा हो जाएगा."

फिर वो छोटी, बूढ़ी औरत
मक्खन और जौ का आटा लाई.

फिर डेगची में डाला गया
मक्खन और जौ का आटा
काली मिर्च और नमक,
छोटे लाल टमाटर,
लम्बी, पतली गाजरें,
साथ में लाल प्याज़,
और एक गोल, सिलेटी पत्थर.

BARLE

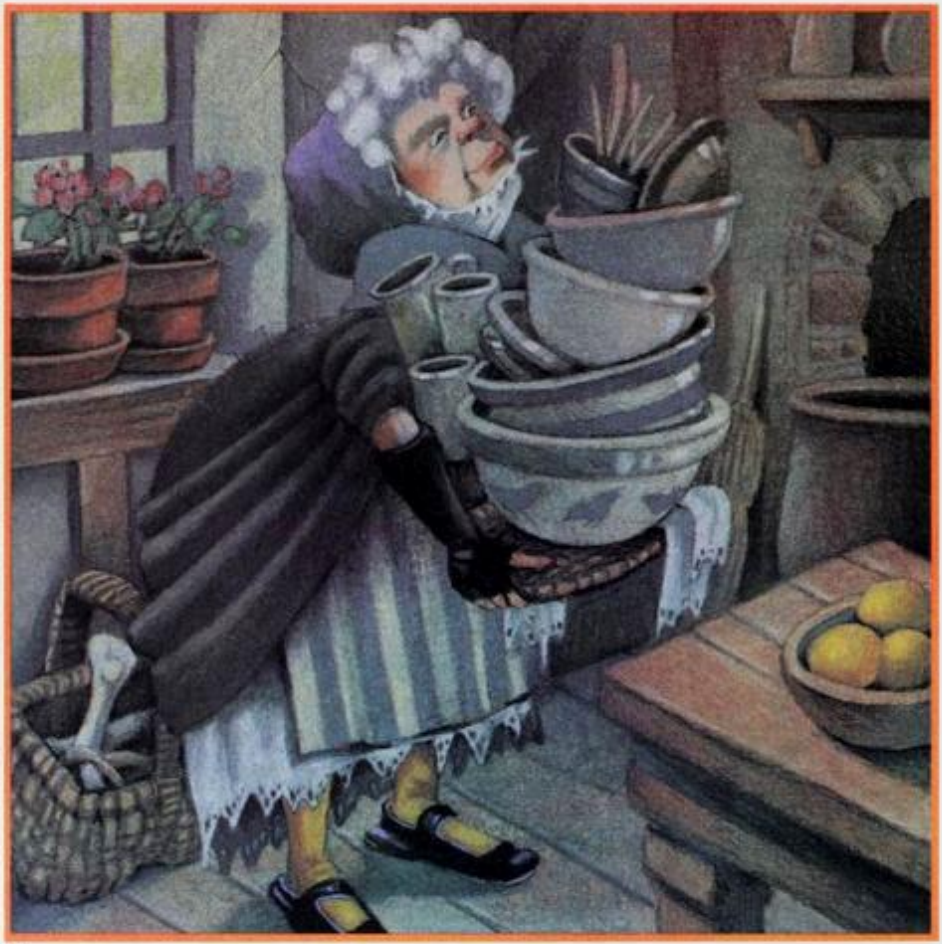

“पत्थर का सूप,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“ज़रा सोचो.”

डेगची लगातार उबलती रही.

कुछ देर बाद उस छोटी, बूढ़ी औरत ने सूप को दुबारा चखा.
“सूप तो उम्दा बड़ा बना है,” उसने कहा.

“हाँ,” उस भूखे युवा ने कहा.
“यह सूप तो राजा के लिए भी उपयुक्त है.
अब हम उसे खाएंगे.”

“अभी रुको!” उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“बिल्कुल ठीक. यह सूप तो राजा के लिए भी उपयुक्त है. इसलिए अब मैं राजा के लिए मेज़ सजाऊँगी.”

फिर उसने मेज़ पर एक नया सुन्दर टेबल क्लॉथ बिछाया, और अपने सबसे सुन्दर बर्तन निकाले.

उसके बाद उस छोटी, बूढ़ी औरत
और उस भूखे युवा ने
पेट भरकर सूप पिया.

उस सूप में था
मक्खन और जौ का आटा
काली मिर्च और नमक,
छोटे लाल टमाटर,
लम्बी, पतली गाजरें,
साथ में लाल प्याज़,
और एक गोल, सिलेटी पत्थर.

“पत्थर का सूप,”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने कहा.
“ज़रा सोचो.”

“अब मुझे आगे यात्रा पर जाना चाहिए,”
उस नौजवान ने कहा.

फिर उसने उस गोल, सिलेटी पत्थर
को उठाकर अपने थैले में रखा.

“तुम वो पत्थर क्यों ले जा रहे हो?”
उस छोटी, बूढ़ी औरत ने पूछा.

“देखो,” युवा ने कहा.
“वो पत्थर अभी पूरी तरह पका नहीं है.
कल मैं उसे कुछ और पकाऊँगा.”

उसके बाद उस युवा ने बूढ़ी औरत से
अलविदा कहा.

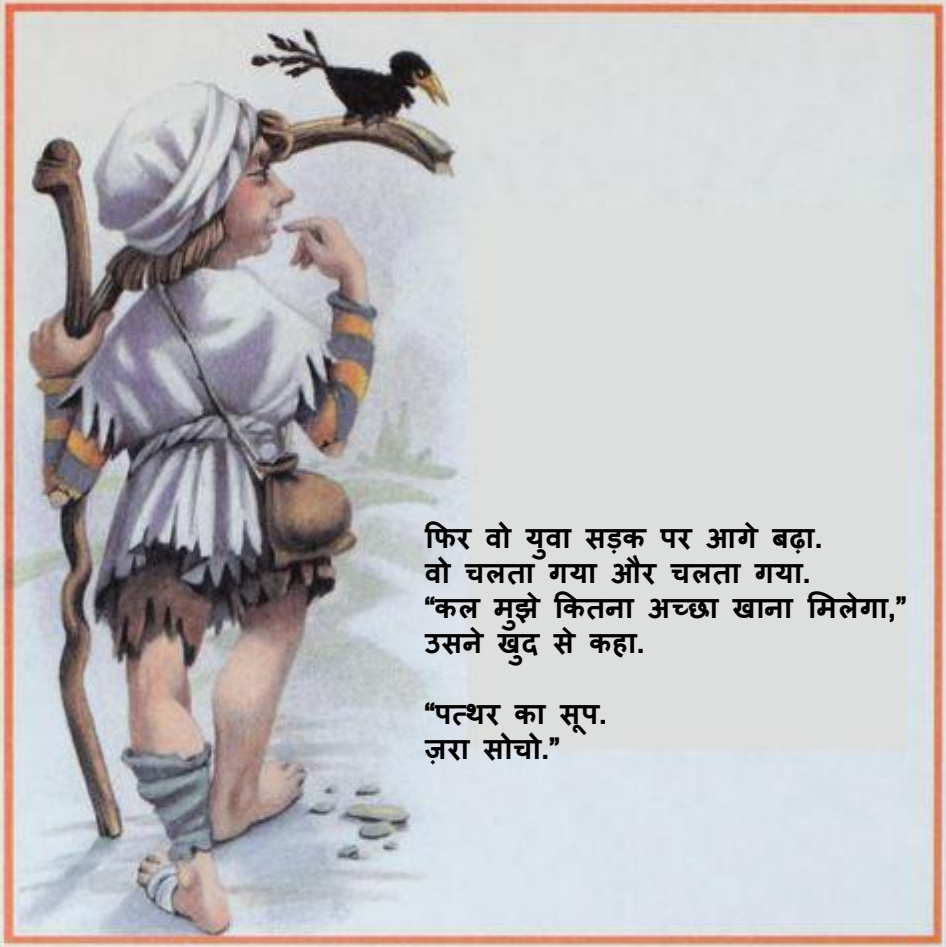

फिर वो युवा सड़क पर आगे बढ़ा.
वो चलता गया और चलता गया.
“कल मुझे कितना अच्छा खाना मिलेगा,”
उसने खुद से कहा.

“पत्थर का सूप.
ज़रा सोचो.”